विभेदित शिक्षण | एक ही माप सबके लिए उचित नहीं

अंकुर मदान

ब्रह्मकमल, गुलाब, सूर्यमुखी...यह सभी आमतौर पर उत्तराखण्ड में पाए जाने वाले फूलों के नाम हैं। नहीं, यहाँ हम माध्यमिक विद्यालय की वनस्पति विज्ञान की कक्षा की बात नहीं कर रहे हैं। यह सारे नाम तो कक्षा पाँच के बच्चों के समूहों को दिए गए हैं। यह सरकारी स्कूल उत्तराखण्ड के एक दूरस्थ गाँव में स्थित है और यहाँ की एक शिक्षिका ने समूहों को यह नाम दिए हैं। समूह के सदस्यों के रूप में बच्चों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी शिक्षिका द्वारा दिए गए कार्यों को साप्ताहिक या द्विसाप्ताहिक आधार पर पूरा करें। इसमें विभिन्न प्रकार के कार्य दिए जाते हैं जैसे कहानी की पुस्तक को एक साथ पढ़ने में एक-दूसरे की मदद करना, कहानी को दर्शाने वाला चार्ट बनाना, उसे रोल-प्ले के रूप में अभिनीत करना, मौलिक कहानी लिखना या प्रश्नों के उत्तर देना और पाठ्यपुस्तक के पाठ से कठिन शब्दों के अर्थ ढूँढ़ना।

कार्य पद्धति

इन कार्यों को रेण्डम रूप से नहीं दिया जाता है और न ही बच्चों को मनमाने ढंग से समूहों में रखा जाता है। बच्चों के लिए समूह और कार्य निर्धारित करने से पहले शिक्षिका प्रत्येक बच्चे के सीखने के स्तर, निर्धारित समय में उसकी प्रगति, रुचि का स्तर और साथियों के साथ उनके सम्बन्ध आदि पर ध्यान देती हैं। जो लेबल मिलता है उस पर बच्चों को गर्व होता है और उन्हें अपने समूह के साथियों के प्रति अपनेपन और ज़िम्मेदारी का अहसास होता है।

शिक्षिका निर्धारित कार्यों में बच्चों की प्रगति का दैनिक/साप्ताहिक रिकॉर्ड रखती हैं और उसके आधार पर समूहों और कार्यों में बच्चों के पुनर्वितरण पर विचार करती हैं। शिक्षण के इस रूप के लिए सहपाठी-अधिगम (peer learning) महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसमें जिन बच्चों के सीखने का स्तर थोड़ा कम होता है, उन्हें अपने समूह के उन बच्चों से सीखने का अवसर मिलता है जिनके सीखने का स्तर उच्च है। किसी दूरदराज गाँव में स्थित एक सरकारी स्कूल की ऐसी कक्षा जिसमें बच्चों की संख्या बहुत अधिक हो, मिश्रित-क्षमताओं वाले बच्चे हों और अच्छे संसाधन न हों, ऐसी जगह से दूसरों को प्रेरित करने वाले 'अच्छे शिक्षण अभ्यास' के उदाहरण मिलने कि उम्मीद शायद ही कोई करे, लेकिन यह कक्षा ठीक वैसी ही है।

व्यक्तिगत आवश्यकताओं का ध्यान रखना

ऊपर उल्लिखित शिक्षिका ने जिन विधियों का पालन किया है, वे वास्तव में विभेदित शिक्षण के बहुत अच्छे उदाहरण हैं। यह शिक्षण का एक ऐसा रूप है जो नियमित कक्षाओं में बच्चों के सीखने की व्यक्तिगत ज़रूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार की रणनीतियों का उपयोग करता है।

उत्तराखण्ड के स्कूल की शिक्षिका निश्चित रूप से उस समय विभेदित शिक्षण के बारे में नहीं जानती थीं। जब उन्होंने अपनी कक्षा में बच्चों को बुनियादी साक्षरता कौशल हासिल करने में मदद करने के लिए उपाय खोजने शुरू किए तो उन्होंने देखा कि हालाँकि बच्चे समान उम्र के थे, लेकिन वे सभी अधिगम के विभिन्न स्तरों पर थे। उन्होंने महसूस किया कि वे चाहे कितनी भी 'अच्छी' तरह से क्यों न पढ़ाएँ, लेकिन केवल कुछ बच्चों को ही उससे फ़ायदा होता था। इसलिए वे समझ गईं कि उन्हें ऐसी शिक्षण पद्धतियाँ अपनानी चाहिए जो उनकी कक्षा के सभी बच्चों के सीखने की व्यक्तिगत ज़रूरतों के अनुकूल हों। यही वह मूल आधार भी है जिस पर विभेदित शिक्षण आधारित होता है।

इस लेख में विभेदित शिक्षण (Differentiating Instruction) के प्रमुख सिद्धान्तों का परिचय दिया गया है और भारत में कक्षाओं के लिए इसकी प्रासंगिकता और व्यवहार्यता को दर्शाने के लिए कुछ उदाहरण भी दिए गए हैं।

विभेदित शिक्षण के प्रमुख तत्व

विभेदित शिक्षण इस धारणा को चुनौती देता है कि समान आयु के सभी बच्चे एक ही तरीक़े से सीख सकते हैं और उन्हें एक ही तरीक़े से पढ़ाया जा सकता है। शुरू में कैरल टॉमलिंसन(Carol Tomlinson) द्वारा प्रस्तावित विभेदित शिक्षण ने कक्षाओं की समरूपता के विचार की कटु आलोचना की और शिक्षकों व शिक्षाविदों का ध्यान उस विविधता की ओर खींचा जो दुनिया के हर स्कूल में और हर कक्षा में व्याप्त है।

सभी शिक्षक इस बात से भली-भाँति परिचित हैं कि उनकी कक्षा में बच्चों के सीखने की क्षमता, रुचियाँ, सीखने के प्रति तत्परता और व्यवहारिक व भावनात्मक ज़रूरतें भिन्न-भिन्न होती हैं। बच्चे विभिन्न सामाजिक-

आर्थिक पृष्ठभूमि से भी आते हैं, भाषा को लेकर उनकी प्राथमिकताएँ अलग होती हैं और वे विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक प्रथाओं का पालन करते हैं। इनमें से प्रत्येक कारक बच्चे की कक्षा में तालमेल बिठाने की क्षमता को प्रभावित करता है, फिर चाहे वह सिखाए जाने वाले पाठ्यक्रम के साथ हो, उनके सामाजिक और भावनात्मक हित से सम्बन्धित हो और या फिर स्कूल में समायोजन करने की बात हो। शिक्षकों के रूप में हम इन अन्तरों को जानते हैं, लेकिन फिर भी हम यह मानते हैं कि बच्चों को पढ़ाने का केवल एक ही तरीक़ा है : हमारा तरीक़ा!

इन मान्यताओं को चुनौती देते हुए, विभेदित शिक्षण, शिक्षकों को सक्रिय रूप से योजना बनाने और शिक्षण, अधिगम व आकलन के लिए ऐसे विभिन्न दृष्टिकोण अपनाने को प्रोत्साहित करता है जो कक्षा में हर बच्चे की सीखने की ज़रूरतों को पूरा करते हों। टॉमलिंसन के शब्दों में, 'विभेदन एक ऐसा कक्षा अभ्यास है जो इस सच्चाई को स्वीकार करता है कि बच्चे अलग होते हैं और प्रभावी शिक्षक वह सब कुछ करते हैं जिससे बच्चे सीख सकें।' (सी.ए. टॉमलिंसन, 2001)

टॉमलिंसन इस बात पर ज़ोर देती हैं कि विभेदित शिक्षण अपने आप में शिक्षण को सिखाने का नुस्ख़ा नहीं है, वरन यह तो एक दर्शन या शिक्षण व अधिगम के बारे में सोचने का एक तरीक़ा है। वे यह भी स्पष्ट करती हैं कि शिक्षण के लिए विभेदित शिक्षण द्वारा निर्धारित कोई सूत्र नहीं हैं; यह तो केवल वे विचार हैं जो शिक्षकों को इस बात के लिए सक्षम करते हैं कि वे अपनी कक्षा के सभी बच्चों की क्षमता का अधिकाधिक संवर्धन कर सकें। विभेदित शिक्षण का सार यह है कि पाठ्यक्रम को जानने-समझने के लिए विद्यार्थियों के लिए विभिन्न अवसरों का सृजन किया जाए और वे किसी एक ही इकाई या पाठ में शिक्षक द्वारा दिए गए कार्य के विभिन्न स्तरों को पूरा करने के माध्यम से अपने अधिगम का प्रदर्शन करें। शिक्षक अपनी कक्षा में सभी बच्चों की व्यक्तिगत क्षमताओं और सीखने की ज़रूरतों का आकलन करके और फिर विषयवस्तु, प्रक्रिया, उत्पाद या परिणाम और *अधिगम के माहौल* को संशोधित करने की दिशा में कार्य करते हैं, जहाँ :

विषयवस्तु से तात्पर्य है वे चीज़ें जिन्हें शिक्षक चाहते हैं कि विद्यार्थी सीखें और इस कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक सामग्री और तरीक़े।

प्रक्रिया अनुदेशात्मक रणनीतियों का एक सेट है जिसका प्रयोग शिक्षक विषयवस्तु को प्रभावी ढंग से विद्यार्थियों तक पहुँचाने के लिए अपनाते हैं।

उत्पाद या परिणाम वे विविध तरीक़े हैं जिनके माध्यम से बच्चे अपने अधिगम का प्रदर्शन करते हैं।

अधिगम के माहौल का अर्थ है शिक्षक द्वारा अपनी कक्षा में एक सम्मानजनक और सुरक्षित वातावरण तैयार करना जिसमें सभी बच्चे अपनी व्यक्तिगत गति और अधिगम के स्तर के अनुसार, कक्षा के साथ सार्थक रूप से जुड़ सकें।

यह सब करने के लिए शिक्षक अपनी कक्षा के सभी विद्यार्थियों के सहयोगी समर्थन पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं, विद्यार्थियों की पसन्द के अनुसार सामग्री, कार्यों और काम करने की गति में लचीलापन सुनिश्चित करते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वे यह बात भी सुनिश्चित करते हैं कि जिन कार्यों में बच्चे लगे हुए हैं, उन्हें समान रूप से महत्त्वपूर्ण माना जाए और उन्हें अपने साथियों और शिक्षक द्वारा समान रूप से सम्मान मिले।

कक्षा में विभेदित शिक्षण का अभ्यास करना

जैसा कि पहले कहा गया है, विभेदित शिक्षण शिक्षण रणनीतियों का कोई ऐसा नुस्ख़ा नहीं है जिसे कक्षा में सीधे-सीधे अपनाया जा सके। इसके विपरीत विभेदित शिक्षण का सार तो उसके लचीलेपन में है और इसमें शिक्षक की अपनी कक्षा के विद्यार्थियों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पहचानने की क्षमता और उन तरीक़ों को अपनाने की बात भी आ जाती है जिनमें विभेदित शिक्षण के प्रमुख सिद्धान्त सम्मिलित हों। इस भाग में विभेदित शिक्षण तकनीकों के कुछ उदाहरणों का वर्णन किया गया है। इन्हें बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं, शिक्षक के लिए उपलब्ध संसाधनों, कक्षा के आकार और शिक्षक की तैयारी में लगने वाली समयावधि और मात्रा के आधार पर किसी भी कक्षा में लागू किया जा सकता है।

ऐसी ही एक तकनीक है एक ही समय में विद्यार्थियों को विभिन्न कार्यों में संलग्न करना। बच्चों को मिश्रित क्षमता वाले समूहों में बाँटकर शिक्षक ऐसे कार्यों की योजना बना सकते हैं जो विभिन्न रुचि स्तर वाले बच्चों को आकर्षित करें और साथ ही जिन्हें पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के कौशलों की आवश्यकता हो। बच्चों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे या तो इन सभी या कुछ कार्यों को अपनी गति से, साथियों के समर्थन के साथ और जब भी वे उन्हें करना चाहें तब करें। उदाहरण के लिए छठी कक्षा में इतिहास के पाठ के लिए शिक्षक बहुस्तरीय कार्यों का एक सेट बना सकते हैं। एक कार्य यह हो सकता है कि बच्चे पाठ्यपुस्तक के पाठ से सम्बन्धित तथ्यों का पता लगाएँ और फिर वे पाठ में बताई गई घटनाओं के कालक्रम का एक अवधारणात्मक मानचित्र तैयार कर सकते हैं। कोई अन्य कार्य ऐसा हो सकता है जिसमें उन्हें किसी विशेष विषय पर पाठ्यपुस्तक के बाहर से अतिरिक्त तथ्यों की खोज करके पूरी कक्षा के सामने उसे

प्रस्तुत करना हो। या फिर वे पाठ से सम्बन्धित नोट बनाकर उसे संक्षेप में प्रस्तुत कर सकते हैं या विद्यार्थियों को रोल-प्ले या कार्टून स्ट्रिप के रूप में पाठ प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया सकता है।

इन अलग-अलग कार्यों की योजना बनाकर शिक्षक यह सुनिश्चित करते हैं कि अलग-अलग स्तर की रुचि और क्षमता वाले बच्चों को न केवल उन कार्यों में भाग लेने के अवसर मिलें जिनमें वे सबसे अधिक रुचि रखते हैं, बल्कि वे विभिन्न तरीक़ों से अपने कौशल और क्षमताओं को प्रदर्शित भी कर सकें। कार्यों के साथ बारीकी से जुड़ा हुआ आकलन यह सुनिश्चित करता है कि बच्चों के अधिगम का मूल्यांकन भी अलग-अलग तरीक़ों से किया जाए।

यहाँ इस बात का ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि हालाँकि शिक्षक को इस तरह की योजना बनाना और उसे पूरा करना कठिन लग सकता है, लेकिन वास्तव में यह उतना कठिन नहीं है। शुरू में कुछ नियोजन और तैयारी की आवश्यकता पड़ सकती है, लेकिन बाद में शिक्षक को ज़्यादा हस्तक्षेप नहीं करना पड़ता क्योंकि इसमें मुख्य बात सहपाठी अधिगम और सहयोग है। जब शुरू में इस तरह के कार्य किए जाते हैं तो कक्षा में थोड़ी अव्यवस्था या अनुशासनहीनता हो सकती है और शिक्षक को इस प्रकार की स्थिति सम्भालने के लिए तैयार रहना चाहिए। पर जब एक बार विद्यार्थी इस प्रकार के कक्षा शिक्षण के अभ्यस्त हो जाते हैं जो उपदेशात्मक (didactic) और शिक्षक-केन्द्रित नहीं है तो वे अपने सीखने की ज़िम्मेदारी लेना सीखते हैं और स्व-अनुशासित हो जाते हैं। एक और ध्यान देने वाली बात यह है कि ऐसे तरीक़े उन कक्षाओं में भी अपनाए जा सकते हैं जो संसाधन की दृष्टि से अधिक समृद्ध नहीं हैं। सीखने के माहौल का निर्माण करने के लिए फर्नीचर की पुनर्व्यवस्था की जा सकती है और विद्यालय में और उसके आस-पास की खाली जगहों का उपयोग किया जा सकता है ताकि ऐसे कार्यों को सफलतापूर्वक किया जा सके।

कक्षा में विभेदित शिक्षण को अपनाना

नीचे कुछ विभेदित शिक्षण सिद्धान्त/रणनीतियाँ दी गई हैं। शिक्षकगण किसी भी विषय में, किसी भी स्तर पर अपने पाठों की योजना बनाते समय इनका ध्यान रख सकते हैं :

प्रमुख अवधारणाओं को पहचानें

यदि किसी विषय से सीखी जाने वाली प्रमुख अवधारणाओं को पहचानकर उसे स्पष्ट कर दिया जाए तो शिक्षक पढ़ाए जाने वाली सामग्री को काफ़ी हद तक कम कर सकते हैं। इससे उन विद्यार्थियों को लाभ होता है जिन्हें बड़े-बड़े पाठों को पढ़ने में कठिनाई होती है जैसे कि अधिगम अशक्तता वाले बच्चे। मुख्य अंशों को चिन्हांकित करना, रेखांकित करना, मुख्य शब्दों को सूचीबद्ध करना और मुख्य विचार वाले फ्लैशकार्ड दिखाना आदि कुछ ऐसे तरीक़े हैं जिनसे हर पाठ आसानी से पढ़ाया जा सकता है।

सामग्री को विभिन्न तरीक़ों से प्रस्तुत करें और अनुभवात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करें

शिक्षक-केन्द्रित, व्याख्यान-आधारित शिक्षण में जो समय लगता है, उसे कम करके शिक्षक विषय-सामग्री को अनुकूलित कर सकते हैं और उसे दृश्य, गतिसंवेदी और श्रवण रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं। इसमें मॉडल, वीडियो, चार्ट और पोस्टर या ऑडियो क्लिप आदि शामिल किए जा सकते हैं। बच्चों की रुचि का स्तर और उनके अधिगम की प्रोफ़ाइल अलग-अलग होती है; अतः इन अलग-अलग तरीक़ों का प्रयोग करने से उन्हें अच्छा लगेगा। इससे विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष रूप से सीखने और अपने दम पर चीज़ों का अर्थ समझने का अवसर मिलता है। ऐसा करने का एक तरीक़ा यह हो सकता है कि कक्षा में विभिन्न कोनों पर स्टाल स्थापित किए जाएँ। विद्यार्थियों को एक के बाद एक स्टालों को देखने और प्रदर्शित सामग्री के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

आकलन के लिए विद्यार्थी के अधिगम की गति के अनुसार अलग-अलग रुब्रिक्स बनाएँ

प्रत्येक बच्चे की ताक़त और कमज़ोरियों को समझकर, कमज़ोरी के उस क्षेत्र को विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित करके शिक्षक किसी भी प्रकरण के लिए आकलन का एक बहुस्तरीय सेट बना सकते हैं। यह सेट विद्यार्थियों को उनकी तैयारी के स्तर और उनकी अधिगम गति के आधार पर दिए जा सकते हैं जिस पर वे काम करने के लिए सहज हैं। जब बच्चा अधिगम के एक उद्देश्य को प्राप्त कर लेता है तब उसे अगले स्तर वाला आकलन दिया जा सकता है। सभी विद्यार्थियों द्वारा आकलन के सभी स्तरों को प्राप्त करना आवश्यक नहीं होना चाहिए।

अलग-अलग मात्रा में अधिगम-समर्थन

सीखने की तत्परता और अधिगम के विभिन्न स्तर वाले हरेक बच्चे को शिक्षण और समर्थन की अलग-अलग मात्रा की आवश्यकता होती है। शिक्षक केवल उन विद्यार्थियों को गहन शिक्षण प्रदान करने में अपनी शक्ति का उपयोग कर सकते हैं जिन्हें इसकी आवश्यकता होती है, इस तरह उनके समय और प्रयास की बचत होगी। दूसरे विद्यार्थी, जो स्वयं और सहपाठियों के समर्थन से सीख सकते हों, उन्हें उसी दिशा में प्रोत्साहित करना चाहिए। इस तरह के तरीक़ों से शिक्षकों को

कक्षा में अपने समय का बेहतर प्रबन्धन करने में मदद मिलती है और विद्यार्थियों को स्वतंत्र शिक्षार्थी बनने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। इससे बच्चों को समानुभूति विकसित करने और अच्छे सहपाठी- सम्बन्ध बनाने में भी मदद मिलती है।

इस बात को समझना महत्त्वपूर्ण है कि इस तरह के प्रत्येक अभ्यास या अनुशंसा के केन्द्र में समावेशन के लिए एक मजबूत प्रतिबद्धता और यह धारणा निहित है कि हर सन्दर्भ में, बच्चों की क्षमता और रुचियों में व्यक्तिगत अन्तर होता ही है और यही हर कक्षा की अनिवार्य वास्तविकता है।

निष्कर्ष

देश में बहुसंख्यक स्कूलों की ख़राब स्थिति को देखते हुए भारतीय सन्दर्भ में विभेदित शिक्षण के तरीक़ों को अपनाने की व्यवहार्यता के बारे में तर्क दिए जा सकते हैं। किन्तु यह समझना ज़रूरी है कि विभेदित शिक्षण एक बहुआयामी दृष्टिकोण है और कक्षा के शिक्षणशास्त्र को पुन: निर्धारित करने का एक तरीक़ा है; यह कोई निर्विवाद नुस्ख़ा नहीं है। जब बच्चों के सीखने की बात होती है तब हम कहते हैं कि एक ही तरीक़ा सबके लिए ठीक नहीं होता, तो यहाँ पर भी हम अपनी स्थिति यानी कि बहुत सारे बच्चों से भरी हुई और कम संसाधन वाली कक्षाओं के अनुसार विभेदित शिक्षण के सिद्धान्तों का अनुकूलन कर सकते हैं। उत्तराखण्ड के इस स्कूल की कक्षा में उपलब्ध दीवार के हर इंच का, काग़ज़ के हर टुकड़े का और चॉक का उपयोग बच्चों के कार्यों और आकलन के लिए बेहतरीन रूप से किया गया है, यही कारण है कि यह कक्षा अनुकरणीय है और भारत की कक्षाओं को विभेदित शिक्षण के आदर्शों और तरीक़ों को अपनाने के लिए इससे प्रेरणा लेनी चाहिए।

References

Tomlinson, C. A. (2001). How to Differentiate Instruction in Mixed Ability Classrooms, ASCD.

अंकुर मदान अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में पढ़ाती हैं। उनके शिक्षण और अनुसन्धान का क्षेत्र बाल-विकास और समावेशी शिक्षा है। उनसे ankur.madan@apu.edu.in पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल